Impact Factor 3.025

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

UGC Approved Monthly Journal

VOL-IV ISSUE-XII Dec. 2017

Address
· Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
· Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
· (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

Email
· aiirjpramod@gmail.com
· aayushijournal@gmail.com

Website
· www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
UGC Approved Sr.No.64259
Vol - IV Issue-XII DECEMBER 2017 ISSN 2349-638x Impact Factor 3.025

कव्वाली–विधा के पर्याय – कव्वाल गायक उ.सईद साबरी (जयपुरी)

स्वाति सक्सैना
(शोध–छात्रा)
संगीत विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय,जयपुर

सूफी शब्द की व्युत्पत्ति के विषय में विद्वानों में मतभेद है। उन्होंने विविध तर्कों एवं युक्तियों द्वारा इस शब्द की भिन्न व्युत्पत्तियों को तर्क संगत एवं समीचीन ठहराने का प्रयत्न किया। अबनस–अल–सर्राज ने किताब अललमा में इस शब्द के विषय में लिखा है मूलतः 'सूफी' अरबी के 'सूफ' शब्द से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ 'ऊन' है। भाषा शास्त्री इस व्युत्पत्ति को ठीक मानते है अल–सरोज का इसके विषय में कथन है कि 'ऊन' का व्यवहार संत, साधक एवं पैगम्बर लोग करते आये है। 1196 ई में मोहम्मद गौरी की सेनाओं के साथ मुईनुद्दीन चिष्ती भारत आयें और लाहौर व दिल्ली की यात्रा करते हुए वे अजमेर जाकर बस गये। भारतीय संगीत को चिष्ती और उनके अनुयायियों ने भारतीय भाषा व लोकाचार को अपनाया। इसके अतिरिक्त उनका अपना एक सूफियाना ढंग था। सूफी लोग प्रेममार्गी थे और प्रेम की पीर व्यक्त करने का संगीत एक सुंदर माध्यम है। सूफियों की खानकाहों पर महफिल सभाओं का आयोजन होता था। यह कव्वाली का ही एक रूप होता था। कव्वाली गीत शैली का उद्भव मुईनुद्दीन चिष्ती अजमेरी के समय में हुआ है। सूफी लोग अपने साथ अरबी व फारसी संगीत भी लाए थे।

दिल्ली दरगाहः अमीर खुसरो– निजामुद्दीन औलिया

भारतीय संगीत में ये आदान–प्रदान प्रायः खुसरों के समय से आरम्भ हुए। अमीर खुसरों ही एक ऐसे शख्स थे जिनको कि उस समय अरबी, फारसी के अतिरिक्त हिन्दी एवं संस्कृत भाषाओं का ज्ञान भी सम्यक् रूप से था। वस्तुतः भारतीय संगीत में इस महान परिवर्तन का श्रेय चिष्ती परम्परा के सूफियों मुख्यतः खुसरों को ही जाता है। खुसरो ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दू–मुस्लिम संस्कृति, सभ्यता एवं भाषा को समन्वय करने का प्रयत्न किया और इसमें सफल भी हुए।

ख़्वाजा साहब अजमेर आकर वहाँ की लोकधुनों से बेहद प्रभावित हुए। उन्होंने अपने कव्वालों को सूफियाना क़लाम को भारतीय धुनों में गाने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार अजमेर में जन्मी

कव्वाली का आधार वहाँ की लोकधुनें भी थी और फारस से सूफियों के साथ आया ईरानी संगीत भी था। उनके कौल, कल्बाना, तराना, सोहेला, नक्ष, निगार, बसीत आदि सुफियाना रंग है तसव्वुफ का स्पर्ष है, प्रेम की और तजजन्य विरह की पीर है, वंदना है। उनकी पीर और वंदना का दर्द हम आज तक महसूस करते है जब हम उनका कोई कलाम गाते है।

इससे स्पष्ट होता है कि ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया की खानकाह में संगीत का कितना जोर था। नए–नए राग–रागिनियाँ अविष्कृत होते, तरह–तरह की संगीत तसनीफ की जाती है, कव्वाल और संगीत विद्वान इनकी दरगाह में सदा बने रहते, जिनमें खुसरों अग्रगण्य थे।

सूफी संगीत में अन्य प्रचलित गये विधाएं

1. ख्याल 2. त्रिवट 3. सावेला 4. सावनगीत 5. तराना 6. गजल

सूफियाना रंग के लिए कव्वाली

कव्वाली एक पारिभाषिक शब्द है जिसके आयोजन की महफिल को 'समाअ' कहते है। इसका अर्थ सुनना था। जिक्र करना और जिस स्थान पर इसका आयोजन होता है उसे समाखाना कहते है।

कव्वाली की परिभाषा – कव्वाली के जन्म और क्रमिक विकास के संबंध में अनेक हिन्दी तथा उर्दू के विद्वानों व संगीतज्ञों ने स्वमत अभिव्यक्त किए है। श्री सुशील कुमार चौबे के अनुसार, उनके शब्दों में कव्वाली का जन्म मज़ार पर हुआ और उसका जीवनकाल वहीं पर व्यतीत हुआ।

कव्वाली में सूफियों का इष्क –ए–हक़ीक़ी अथवा ईष्वर भक्ति दृष्टिगोचर होती है। कव्वाली मुस्लिम भक्ति का संगीत की प्राचीन शैली है। अमीर खुसरो के समय से कव्वाली संगीत की प्रथा रही। आचार्य बृहस्पति के अनुसार ''कौल'' का अर्थ कथन, वचन, प्रवचन, प्रतिज्ञा या विषिष्ट उक्ति है। कौल गाने वाला कव्वाल है। कव्वालों की गान शैली, कव्वाली और कव्वालों की गान शैली में गायी जाने वाली गजलें ही गेय रूप में कव्वाली कहलाती है।

कव्वाली तो सूफिया ने कलाम की महफिल काल की बहुत पुरानी यादगार है। क्योंकि हज़रत ख्वाजा मुइनुद्दीन चिष्ती अजमेरी व इनके समय के हालात में भी कव्वाल व कव्वाली का वर्णन पाया जाता है। और यह तो बहुत ही मषहूर है कि ख्वाजा कुतुबुद्दीन व बख्तियार काकी देहलवी को देहांत कव्वाली सुनते–सुनते हुआ था। इसलिए यह कहना तो सरासर गलत है कि कव्वाली हज़रत अमीर खुसरों से शुरू हुई। अलबत्ता यह हकीकत है कि पहले कव्वाली 'दफ़' पर होती थी और 'दफ' के साथ सुरलय के अनुसार गाने का नाम ही 'समाअ' या कव्वाली था। मगर मौजूदा वाद्य जैसे सितार, ढोलक या तबला वगैरह वाद्य के साथ कव्वाली गाना और गजलों की तर्ज़ो का रागों की बंदिष में होना और तालों में होना, कौल, कल्बाना, नक्ष व गुल और रंग वगैरह गानों का कव्वाली में शामिल होना, यह अलबत्ता हज़रत अमीर खुसरो नहीं अपितु उन्हें इनका पोषक मानते है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि हज़रत अमीर खुसरो ही कव्वाली गाने को प्रचलित करने का श्रेय रखते है। आचार्य बृहस्पति जी के अनुसार उस समय गज़लों व कव्वालियों का प्रभाव था। कव्वाली चिष्ती परम्परा के सूफियों की भक्ति का माध्यम रही है। चिष्ती परम्परा के सूफी स्वयं अच्छे संगीतज्ञ थे। ये अपनी खानकाहों में ही संगीत की विभिन्न शैलियों की रचना करने में समर्थ थे। उनकी खानकाहों में स्थाई रूप से कव्वाल गायक और उनके साथ गाने वाले भी रहा करते थे।

भारत में 18वीं शताब्दी में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिष्ती ने सर्वप्रथम अजमेर में संवत् गान के रूप में गज़ल और रूबाइयों का प्रयोग कव्वाली पद्धति में किया। उन्होंने अजमेर की परम्परागत लोकधुनों को अपने कव्वालों को आत्मसात करने को कहा और वही कव्वाली गीत शैली का परिमार्जन भी हुआ।

आचार्य बृहस्पति जी के अनुसार ''ख्वाजा मुइनुद्दीन चिष्ती जी ने अजमेर की भाषा और वहाँ की प्रचलित धुनों और छंदों में अपनी बात कहने के लिए अपने कव्वालों को प्रेरित किया। यही कारण है कि चिष्ती परंपरा के प्रसिद्ध पुरूष शेख निजामुद्दीन की दरगाह में जो रचनाए गाई जाती है वे सर्वथा भारतीय है। वे धुने या तर्ज़ सर्वथा प्रचलित लोकगीतों से प्रभावित है।

कव्वाली की सप्रचलन तथा आरम्भी भक्तिभावा के संचार के लिए ही किया गया। अतः चिष्ती परम्परा के सुफियों ने इसे अपनाया। इसी सूफी वर्ग ने इस शैली के गायकों को जन्म दिया दूसरे शब्दों में कव्वाली एवं कव्वाल दोनों ही के असली जन्मदाता चिष्ती परम्परा के सूफी है इन्हीं लोक धुनों के आधार पर आचार्य बृहस्पति लिखते है कि चिष्ती परंपरा में गाई जाने वाली कव्वालियों मूर्च्छना पद्धिति में वर्गीकृत की जा सकती है।

कव्वाली (उर्दू:)

कव्वाली, भातरीय उपमहाद्वीप में सूफीवाद और सूफीवाद और सूफी परम्परा के अंतर्गत भक्ति संगीत की एक धारा के रूप में उभर कर आई। इसका इतिहास 700 साल से भी ज्यादा पुराना हे। वर्तमान में यह भारत, पाकिस्तान एवं बांग्लादेष सहित बहुत से अन्य देषों में संगीत की एक लोकप्रिय विद्या है। कव्वाली का अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप नुसरत फतेह अली खान के गायन से सामने आया।

पर्शियन सूफी तत्व और परम्परा में 'समा' या 'समाख्वानी' का रिवाज एक आम बात है। इस समाख्वानी में अक्सर निम्न गीत गाये जाते थे और इनमें गीत है भी।

1. कसीदा– किसी की तारीफ मेंकहा। लिखा/गाये जाने वाला पद्य रूप।
2. हम्द – अल्लाह की तारीफ या स्त्रोत में गाये जाने वाला गीत या कविता।
3. कौल – अरबी भाषा का शब्द है इसका अर्थ कथन,वचन, प्रवचन, प्रतिज्ञा या विषेष उक्त से है।
4. कल्बाना– कल्बाना के असल 'कल्बहू'। यह गाना अरबी और हिंदी शब्दों से मिलकर बनता हे।
5. मसनबी –इसका कम प्रचलन है। पर इसे कव्वाली में नगमा–ए–दात के बात पढ़ते है। ये ताल विहीन होते है। इसमें ताल या हाथ से ताली बजाना वर्जित है।
6. नात ए–शरीफ (नात)– हज़रतमुहम्मद की शान में कविता या गाये जाने वाले गीत।
7. मन्कबत (मनकबत)–वलियों की शान में कविता या गाये जाने वाले गीत।
8. मरसिया–शहीदों की शान में गीत या गाये जाने वाले गीत।
9. गज़ल–प्रेमगीत। चाहे आप अपने ईष्वर से बात करो या प्रकृति से या प्रेमिका से या अपने आप से।
10. मुनाजात– एक एक प्रार्थना है, जिसको दुआ या मुनाजात भी कहा जाता है।

क्या किसी खासकंठ से निकलने वाली आवाज चंद साज के साथ मिलकर ऐसी ताकत पैदा करते है जो बंदूकों की बोली बोलने वालों में खौफ पैदा करे? आखिर कव्वाली ऐसी कौनसी विद्या है जिसके सामने खून–खराबे करने वाले तक खुद को बेहद कमजोर महसूस करने लगते है?

कव्वाली लोकप्रिय विद्या जो करीबन 700 साल से लगातार सुनने–सुनाने वालों की पसंद बन कर रही है। 8वीं सदी में ईरान और अफगानिस्तान में दस्तक देने वाली संगीत की अनोखी विद्या शुरूआती दौर से ही सूफी रंगत में डूबी, वह विद्या जो 13वीं सदी में भारत आई।

यह इस्लाम का सूफी स्वर ही था जिसने उपेक्षा की षिकार निचली जातियों को अपनी ओर आकर्षित किया। अब–जब सूफियन ने इन्हें अपना लिया है, तो इन जातियों को इनका मज़हब याद दिलाने की कोषिष हो रही है, लेकिन कव्वाली तो कब की इंसानियत की आवाज बन चुकी है।

कव्वाली का आगाज मुस्लिम धर्म के सूफी पीर या फकीरों ने किया। आठवीं सदी में ईरान और दूसरे मुस्लिम देषों में धार्मिक महफिलों का आयोजन किया जाता था। जिसे 'समां' कहा जाता था। 'समां' का आयोजन धार्मिक विद्वानों यानी शेख की देखरेख में किया जाता था। समां का मकसद कव्वाली के जरिए ईष्वर के साथ संबंध स्थापित करना होता था।

ईरान से भारत आई कव्वाली

शुरूआत में सूफियों ने अमन और सच्चाई का पैगाम पहुंचाने के लिए मैसिकी और समां का सहारा लिया। ईरान से चलकर कव्वाली भारत आई और भारत के सूफी संतों ने कव्वाली को लोकप्रिय बनाया।

इसमें चिष्ती संत शेख निजामुद्दीन औलिया का प्रमुख योगदान रहा। इसके बाद अमीर खुसरो ने भारतीय संगीत और लोक भाषाओं का समायोजन करके कव्वाली को अपने समय की संगीत की एक विकसित और लोकप्रिय विद्या के रूप में स्थापित किया। प्रार्थना, भजन की तरह कव्वाली में शब्दों का ही असली खेल है। लेकिन कव्वाली की विषेष बनावट के कारण शब्दों और वाक्यों को अलग–अलग तरीके से निखार कर गाया जाता है। हर बार किसी विषेष स्थान पर ध्यान केन्द्रित करने से अलग–अलग भाव सामने आते है।

कव्वाली आध्यत्मिक पक्ष सूफी धर्म के अनुसार 'कल्ब' आत्मा की वह उच्चतम स्थिति है जो कि बुद्धि से संबंधित है रूह और नकस के मध्य में स्थित है। कल्ब के प्रति समर्पण की भावना के 'कौल' को जन्म दिया। कौल गाने वाले कव्वाल कहलाये। कव्वालो की गान शैली होने के कारण कौल को कव्वाली कहा जाने लगा।

इस तरह कव्वाली से बुर्जुगाने दीन के अक़वाल तसव्वुक के मसाइल जैसे नाअत, इष्क मआरेकत हकीकत मन्कबत होते है। सुनने और सुनाने वाले भी सूफी और मषाएख होते थे जो कव्वाली को एक तरीका–ए–इबादत समझते थे। कव्वाली के काव्य के प्रकारों में– कौल या तसव्वुक की गज़ले, मुखम्मस, मुसल्लस, मुरब्बा मुसनवी इत्यादि का प्रयोग होता है, खास कव्वाली के आरम्भ में 'चादर' गाई जाती है, उसके बाद कौल और अंत में रंग गाया जाता है।

कव्वाली का शास्त्रीय पक्ष– कव्वाली में तान, पलटा ज़मज़मा, बोलबॉट सभी कुछ होता है। प्रसिद्ध उस्ताद तानरस खाँ एक अच्छे कव्वाल भी थे। गज़ल की एक विषिष्ट शैली में गाने वाल कव्वालों व सूफियों के साथ वे सदा रहा करते थे।

कव्वाली में नक्ष, दादरा, गज़ल, हम्द, नात, कसीदा, रूबाई, दोहा, क्लबाना, गल आदि का विकास व प्रचार विभिन्न मुसलमान गायकों द्वारा समय–समय पर होता रहा और इन्ही शैलियों से प्रभावित होकर कव्वालों के द्वारा ख्याल गायन की उत्पत्ति हुई।

पहले तो महफिल 'समां' या कव्वाली में केवल दफ पर ही सूफी नृत्य करते थे। किन्तु विभिन्न वाद्यों के साथ कव्वाली गाने का रिवाज़ खुसरो ने ही दिया था। कव्वाली गीत शैली कव्वाली ताल, दादरा ताल, दीपचंदी आदि तालों में गाई जाती है। अमीर–खुसरो ने कव्वालों के अंतर्गत जो नवीन शैलियों का वर्णन किया था वे कौल, कल्बाना, नक्ष, गुल रंग आदि के नाम से जानी जाती है। इसमें फारसी भाषा के शब्द और मुसलमान सूफी साधुओं की बाते होती है। कभी तराने के बोल भी इसमें शामिल होते है। कल्बाना, नक्ष व गुल ये सभी इसी की किस्में है, इन्हें अमीर खुसरों ने ईजाद की है।

इस जमाने में प्रबंध और छंद ब्रज भाषा तथा संस्कृत में गाये जाते थे और मुसलमानों को इसके उच्चारण में हिचकिचाहट होती थी। खुसरों ने ईरानी अंदाज में गाना शुरू किया। कौल कल्बाना गाते

हुए क्योंकि पवित्रता को बरकरार रखना होता है, इसलिए इसमें गंभीर रागों के टुकडे लगाये जाते है, जिसमें, खुदा या नबी के नाम की गरिमा है जिससे सूफियों के हृदय का कोना–कोना रोषन हो सके। कौल और कल्बाना में एक फर्क होता है कि कौल में अरबी शब्दों के साथ तराना के बोल होते है अैर कुल्बना में अरबी शब्दों के साथ हिंदी के शब्द शामिल होते है। कौल सिर्फ एक राग और एक ताल में होता है किन्तु कल्बाना में कई राग और कई–कई ताले शामिल होती है। इसके हर टुकडे के साथ इसकी ताली बदल जाती है कुछ विद्वान कल्बान को 'तालसागर' भी कहते है। आजकल यह बहुत कम गाया जाता हे, क्योंकि इसके संगतकार कलाकार कम मिलते है।

पुराने मशहूर कव्वाल – अज़ीज़ मियां कव्वाल, बहाउद्दीन कुतुबद्दीन, हबीब पेइंटर, अज़ीज वारसी, जफर हुसैन खाना बदायुनी, मोहम्मद सईद चिष्ती, मुंषीरजी उद्दीन, नुसरत फतेह अली खान, साबरी बंधु आदि।

आज के मशहूर कब्बाल– बद्र अली खांना, छोटे अजी जनाजा फरीद अय्याज, मेहर अली शेर अली, राहत नुसरत फतह अली खां, रिजवान–मुअज्जम, अमजद साबरी।

उ.सईद साबरी जी का जीवन परिचय

शास्त्रीय संगीत जगत के मूर्धन्य आचार्य एवं समाजसेवी उदारमना, सहृद्य एवं स्वभावतः सहज सरल गायनाचार्य उस्ताद हाजी सईद साबरी का जन्म ई. 1936 जयपुर (मथुरा वालों की हवेली) में हुआ। मात्र 7–8 वर्ष की उम्र से गायन प्रारम्भ किया। आज वे 81 वर्ष के हो चुके है। संगीत–यात्रा के 80 वर्ष पूर्ण होने को है। इस यात्रा में कई विषिष्ट एवं अति विषिष्ट लोग शामिल है। आपकी इस यात्रा में आपके पिताजी उ. अल्लाउद्दीन साबीर मियां आपके ताउजी, भाई एवं पत्नी आदि का विषिष्ट एवं महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आपको अनुवांषिक गुणों तथा बाल्यावस्था में मिलने वाले परिवेष से संगीत संस्कार स्वाभाविक रूप से ही मिल गया। संगीत वातावरण की स्वर–लहरियों ने बरबस अपनी ओर आपको आकृष्ट किया। आपका संस्कारित कोमलकांत हृदय सहज रूप से संगीत जेसे मृदु कला से जुड़ गया और आपने संगीत को अपना सर्वस्व मान लिया। 7–8 वर्ष की सुकुमार अवस्था में प्रारम्भिक संगीत षिक्षा आपने अपने पिता जी उत्र साबीर मिया और (ताऊ) तायां जी उ0 अब्दुल रहीम खां साबीर जी से तालीम ली। कालान्तर में आपके पिता एवं गुरू के गहन सान्निध्य में आपने समृद्ध प्रषिक्षण प्राप्त किया। दोनों ही तत्कालीन समय के प्रख्यात संगीतज्ञ थे। पारिवारिक परिवेष में शास्त्रीय–संगीत के प्रति अनुरक्ति वस्तुतः माँ शारदा की कृपा का प्रतिफल था आपको बाल्यकाल से ही महान संगीतज्ञों की गायक ने प्रभावित किया।

आपको आपके परिवार की इस खानदानी परंपरा को आगे बढ़ाने का श्रेय को जाता है। जब संगीत की तालीम आपने अपने वालिद के निवेदन करने पर डागर धराने के विद्वानों उस्तादों से लेना शुरू की तब आपने संगीत के शास्त्रीय गुर सीखें साथ ही साथ कव्वाली में आपका रूझान होने से आप आपने इस गायन कला में शास्त्रीय रागों का प्रयोग करते हुए अपना महारत हासिल की। आपने देष, विदेष की कई कार्यक्रमों दरगाहों, प्रतियोगिताओं में अपने फन और हुनर से लोगों का दिल जीता। आपके प्रदर्षन में बैठे श्रोतागणों ने इस विद्या के माध्यम से अपने आपको अल्लाह या ईष्वर के दरबार में होना महसूस किया कि कव्वाली गायन के माध्यम से आपने आध्यात्मिक संगीत, धर्मनिरपेक्षता आदि कार्यक्रमों के कई उदाहरण पेष किए। आज भी आप 80 के दषक में अपनी इस कला के माध्यम से संगीत जगत में अपना नाम निरन्तर बनाए हुए है। आप आज भी अपने पुत्रों एवं षिष्यों के साथ कव्वाली गायन की महफिलों में जाते है और अपने फन का इख्तियार करते है। और श्रोताओं से संगीत के माध्यम से रू–ब–रू होकर अपने गायन से गिरह के शब्दों द्वारा उस का अर्थ खोलकर श्रोताओं को समझाकर गाते है। एक ही शब्द के सर से कई मकाम एवं अलग–अलग अर्थ पेष कराना, शास्त्रीय रागो का मिश्रण कर (अर्थात आविर्भाव एवं तिरोभाव) द्वारा गायन विद्या में चार चाँद लगाकर लोगों का दिल जीत लेते है।

आप औपचारिक षिक्षा हेतु उर्दू विद्यालय गये, जिसमें आपने उर्दू भाषा के अतिरिक्त फारसी (पर्षियन) और हिन्दी भाषीय ज्ञान प्राप्त किया, जो आज आपकी कव्वाली गायन की प्रस्तुति के समय भाषा के अधिकार के रूप में दृष्टिगत होता है। मथुरा में ही आपके नाना जी उस्ताद चाँद खां साहब ठुमरी गायन के उम्दा गायक थे। ये बनारस घराने के गवैये थे, जिनसे आपे गण्डा बंध, गुरू–षिष्य परम्परा से गायन विद्या सीखी। आपके पूर्वज मुगल काल के समय से ही गायन विद्या से जुडे हुए है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि आपके पूर्वज पीढी–दर–पीढ़ी से संगीत विद्या से जुड़े है। आप 'जयपुर साबरी कव्वाल–घराने' (मथुरा वाले) के सिद्धहस्त गायक है। कव्वाली के अलावा आप ख्याल, ठुमरी, ध्रुपद, धमार, होरी, लोकसंगीत (माँड), भजन, गीत आदि की पारम्परिक बंदिषों एवं धुन को अपनी गायन कला की विषेषताओं के साथ जेसे रागों के शास्त्रीय नियमों, बोला और शब्दों के माध्यम से गिरह लगाकर उस बोल को अलग–अलग स्वरों और अर्थो में उसके मांयने समझाकर गाते है उनकी गायकी की ये अपनी विषेषता है इस तरह की गायकी को गाने में वे निष्णात हे। आपके पिताजी तत्कालीन समय के नक्काली पेषकार भी रहे है। आपके पूर्वजों के गायन एवं कला (नक्काल) से प्रभावित होकर जयपुर के महाराज ने 'मथुरा वालों की हवेली' पुरूस्कार में दी, जो जयपुर में स्थित है। यहां 16 नक्काल मुलजिम थे। जिन्हें दो भाग/ग्रुप में बाँटा गया था। वर्तमान में आपके पुत्र उस्ताद फरीद साबरी एवं अमीन साबरी संगीत–विद्या के कव्वाल पक्ष की कीर्ति देष–विदेष में फैला रहे है।

आपकी गायकी का भाव पक्ष इतना प्रबल है कि नेत्रों से अश्रुओं की अविरल धारा निकल पड़ती हे। सच्चे अर्थों में आप उदात षिल्पी है। प्रायः ध्यान–मुद्रा में खोए रहते है। संगीत के स्वर जेसे आपके राम–रोम में समाये हो और उनके मुखार बिंदू से नूतन रूप में कोई नया स्वरूप लेने के लिए अकुला रहे हो, ऐसा प्रतीत होता है। आपका समस्त जीवन संगीत को समर्पित रहा है। अल्लाह के करम से आपने अपने षिष्यों के प्रति सदैव सहयोगी व प्रेरक भूमिका निभाई है। आप अपने षिष्यों के चेतन व अवचेतन मन में राग, बंदिषें और गायकी की बारीकियों को पूर्णतः स्थापित करने के लिए नानाविद्य प्रयत्न करते है। आप अपनी परम्परा को निभाने वाले चौथी पीढ़ी के कलाकार है। आपने अपनी गायकी में अपने अनुभवों को इस तरह ढाला है जो आज इस उम्र के पड़ाव में आपकी गायकी के माध्यम से वह बरबस ही निकल जाते है। आप गायकी के विभिन्न पक्षों को बड़ी ही साधारणतया सहज और सरल भाव से गाते व सुनाते रहते है।

संगीत शिक्षा व शिष्य परम्परा

उ. हाजी सईद साबरी ने पारिवारिक–सांगितिक षिक्षा लेने के बाद अपने पिताजी के अलावा अन्य विद्धानों एवं गुणी जनों से संगीत षिक्षा प्राप्त की।

आपने अपनी लगन और निष्ठा से निरन्तर साधना कर अपने व्यक्तित्व को इस तरह विकसित किया कि आप एक समर्थ और समर्पित गुरू कुषल वाग्ग्येकार, सफल संगीत–समायोजक एवं सिद्ध कलाकार के रूप में प्रतिष्ठित हो।

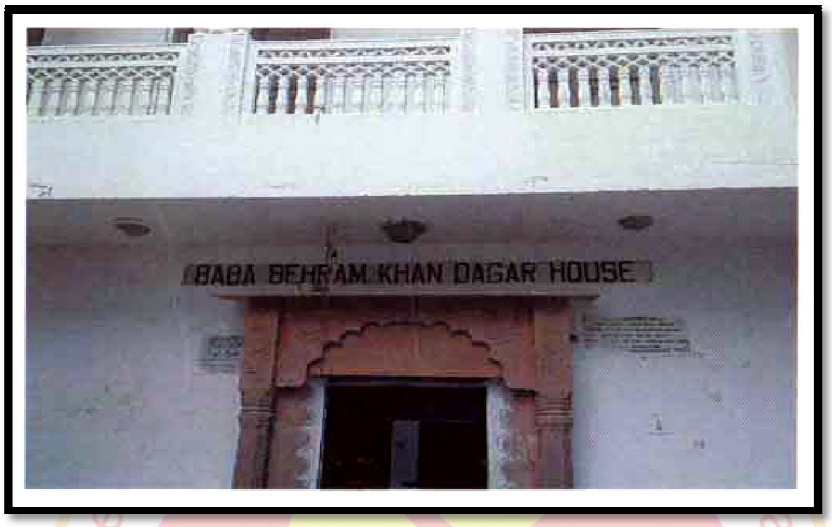

जयपुरः बाबा बहराम खां डागर हाउस

डागर परिवारः एक साथ रियाज़ करते हुए

आपने डागर घराने की गायकी की बारीकियों को अपनी गायकी में अपनी सूझ के साथ प्रयोग किया और अपनी गायन को सुदृढ़ किया। आपने डागर घराने के मुख्यतया उस्ताद रहीमुद्दीन डागर, उ. इमामुद्दीन डागर, उ. फैयाजुद्दीन, उ. हुसैन उद्दीन (तानसेन पांडे जी), उ. कईमद्दीन (पद्म विभूषण), उ. अषफाक डागर (कलकत्ता वाले) और उ. जाहिरूद्दीन डागर जी से संगीत की तालीम ली। गुरूजनों से प्राप्त तालीम तथा स्वर चिंतन के आधार पर आपका संगीत प्रषिक्षण से संबंधित निजी चिंतन भी है। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि आपके पिता का संगीत षिक्षा के प्रति दृष्टिकोण उदार था। आपके अनुसार ''आपने डागर घराने में 10 वर्ष तक अपने उस्तादों से संगीत की तालीम ली। लेकिन आपके वालिद का इंतकाल बडी जल्दी हो जाने से परिवार की सारी जिम्मेदारी आप पर आ

गई'' तब आपने रोज़मर्रा की जरूरतों को पूरा करने के लिए कव्वाली गायन द्वारा परिवार का निर्वाह करना शुरू किया।

पिछले 50 वर्षो से अपने साधनागृह में गुरू–षिष्य प्रणाली के अनुसार संगीत–कला के विद्यादान का यज्ञ उस बडी निष्ठा से सम्पन्न कर रहे है। ना केवल आपने अपने पुत्रों बल्कि कई संगीत–विद्यार्थियों को विधिवत षिक्षा दी और निरंतर दे रहे है। आपने बताया ''मैं (आप) बिना किसी आर्थिक लाभ के ही अपने षिष्यों को अनवरत रूप से संगीत–षिक्षा दे रहा हूँ।'' निः संदेह यह संगीत समाज के लिए एक बड़ा योगदान है। आप बड़ी ही पैनी दृष्टि से विद्यार्थी की अभिरूचि और क्षमता का निरीक्षण करके योजनाबद्ध तरीके से प्रषिक्षण प्रदान करते है।

घर पर रियाज़ कराते हुए : उ. सईद साबरी एवं शिष्य

आपकी आवाज की अभिव्यंजना सहज और स्वाभाविक है। आपकी गायकी उपषास्त्रीय मज़ामीर गायकी है, जिसको आप गाते है। आपकी गायकी में रस प्रधानता और शाब्दिक भाव प्रबल है। आपकी गायकी की तारिफ करते हुए पाकिस्तानी गायिका रेषमा जी कहती है कि ''हम तो बनजारन है, आप तो गुणी खां साहब है। आपकी आवाज़ दमदार, असरदार और तीनों सप्तकों में समान अधिकार से विचरण करती है।''

जयपुर (सईद साबरी जी के प्रांगण में): उ. वासुउद्दीन डागर साहब

उ. वासुउद्दीन डागर एवं स्वर्गीय उ. सईद्दीन डागर जी का कहना है ''सईद साबरी जी ने न केवल सबक सीखा बल्कि उसके अभ्यास को निरन्तर रूप से किया, वे अपनी तालीम को बडी सूझ–समझ के साथ अपनी गायकी में प्रयोग करते है, उन्होंने अपनी तालीम और गायकी अपने अंदाज में कव्वाली गायन क्षेत्र में बड़े उम्दा प्रयोगों के साथ प्रस्तुत की है। किन्तु उनकी गायकी में हमारे

बुजुर्गो की गायकी का असर सुनने को मिलता है।'' उ. सईद साबरी अपने उस्तादों का बड़ा मान रखते है। वे कहते है कि, ''हमारी तो पूरी दुनिया ही उस्ताद है'' हमें तो सभी से कुछ न कुछ सीखने को मिला है।''

Sayeed Sabri with Lata Mangeshkar

Sabri performing at a function in Mumbai. Among the audience is music director late Naushad (R)

उनके बडे बेटे फरीद साबरी जी कहते है कि ''हमारे पिताजी की गायकी को कई फिल्मी कलाकार हस्तियों ने सुनना पसंद किया जिनमें, लता जी, आषा जी, रवीद्र जैन जी, नौषाद संगीतकार, जयप्रदा, राजेष खन्ना, आमीरखान इत्यादि मुख्य है। जिन्होंने हमारे वालिद को रात–रात भर सुना है और हमारे वालीद ने अपनी गायकी से उनके हृदय में अपनी छाप छोडी है। इनके अलावा हिन्दुस्तान के शास्त्रीय गायन के सिरमौर कलाकार उ. बडे गुलाम अली खां साहब हमारे पिताजी के गायन में मुख्तया ''आये ना बालम का करूँ सजनी'' सुनकर और उनकी अदब देखकर बोले ''अरे। मुण्ड़ा तुम बडे अदबदार हो, तुम बहुत सुरीले होगें। तुम्हारा गाना बहुत ही असरदार है।''

मुम्बई : उ. सईद साबरी जी एवं मशहूर ग़ज़ल गायक मेंहदी हसन साहब

आपकी गायकी का ना केवल इन उस्तादों ने पसंद किया बल्कि ग़जल गायक मेंहदी हसन साहब, गुलाम अली खां साहब, रसीद खां सितार वादक इत्यादि कलाकारों ने आपकी गायकी अंदाज को खूब सराहा। जयपुर के ग़ज़ल गायक उ. अहमद एवं मोहम्मद हुसैन तथा सारंगी वादक पदमश्री उ. मोइनुद्दीन खां इन सबका कहना है कि ''आपकी गायकी असर रखती है, और यह सुनने वालों को सीधे अल्लाह से जोड़ देती है। कव्वाली गायकी के विषिष्ट फन से आपको पहचान मिली है।''

आपके अनुसार ''कव्वाली शौक नहीं इबादत।'' उ.प्र. के कव्वाल गायक सलीम जाफर बदायूनी सहसवान घराने से ताल्लुक रखते है, जिनके पुत्र जाफर हुसैन सुल्तानी बदायूनी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त हुआ कि ''आप और आपकी वालिद उस्ताद एक साथ कई बार कव्वाली प्रदर्षन कर चुके है।

आपकी गायकी की अपनी अलग पहचान है जो मेरे वालिद और मुझे बहुत पसंद आती है।'' उ. सईद साबरी जी कहते है कि ''कव्वाली गायकी संगीत की अन्य विद्याओं से ज्यादा कठिन है। कुछ दिनों के रियाज़ (अभ्यास) से एक गायक बना सकता है, लेकिन कव्वाल नहीं।''

फिल्म (हिना) : उ. सईद साबरी एवं उनकी पार्टी की प्रस्तुति

फिल्म (रब्बा यार से मिला दे) : उ. सईद साबरी एवं उनकी पार्टी की प्रस्तुति

आपके योगदान और उपलब्धियाँ– आपने प्रचलित लोकप्रिय फिल्मी संगीत में भी अपने गायन और संगीत निर्देषन का योगदान दिया जिनमें मुख्य हिना, परदेस, सिर्फ तुम, उफ ये मोहब्बत, बरसात की रात अन्य फिल्मों में अपनी गायकी एवं संगीत निर्देषन साथ–साथ दिया है। आपके द्वारा गायी हुई कव्वालियों को गीत एवं रचनाओं को मषहूर शायरों ने लिखा है। आपका कहना है कि गायकी में भाव पक्ष नहीं तो गायन निर्जिव है। और शब्दों के हर पहलू को अपने संगीत की समझ से उसे जीवित करने की कोषिष करता हूँ। उस्तादों के दिए हुए सतके को मैं अपनी गायकी की रूह मानता हूँ और उसे अपनाने का अभ्यास करता हूँ। इस उम्र में भी अल्लाह मुझे गाने देता है। यह सब उसी की मेहरबानी है।

आप आकाषवाणी के विख्यात कलाकार हे, आपने देष के प्रतिष्ठित समारोहो व गोष्ठियों में सफल कार्यक्रम द्वारा भूरि–भूरि प्रषंसा प्राप्त की है।

प्रतीक बताया।

सईद साबरी को अवॉर्ड

जयपुर ● इंटरनेशनल लेवल पर कव्वाली गायकी के लिए पिकसिटी का नाम रोशन करने वाले कव्वाल सईद साबरी को राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने संगीत नाटक अकादमी अवॉर्ड से सम्मानित किया। जयपुर की कव्वाली परंपरा में उल्लेखनीय योगदान के लिए साबरी को यह सम्मान मिला है। राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में उन्हें सम्मान स्वरूप एक लाख रुपए का चैक, ताम्रपत्र व शॉल और श्रीफल प्रदान किया गया।

दिल्ली(राजभवन): पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी द्वारा सम्मानित

"संगीत नाटक अकादमी अवॉर्ड"

आपने अपनी संगीत यात्रा में कई उपलब्धियाँ, सम्मान प्राप्त किए हाल ही में 4 अक्टूबर 2016 को आपको राष्ट्रपति द्वारा संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली द्वारा आपके योगदान के लिए अलंकरण प्रदान किया गया। इसके अलावा राजस्थान दिवस (उदयपुर, जवाहर कला केन्द्र–जयपुर) जयपुर समारोह आदि में अपनी गायकी का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कव्वाली के उत्सवों एवं महोत्सवों में आप अन्य राज्यों में अपनी प्रस्तुति करते रहते है। आपने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खाडी देष (यू.ए.ई.) दुबई, साउदी अरब आदि स्थानों पर श्रोताओं का दिल जीतने वाली प्रस्तुतियाँ दी है।

उ. सईद साबरी द्वारा प्राप्त सम्मान एवं प्रमाण–पत्र

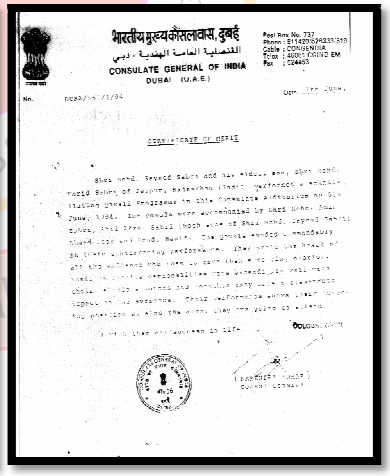

भारतीय मुख्य कौंसलावास, दुबई
CONSULATE GENERAL OF INDIA
DUBAI (U.A.E.)

गुणीजन–2002 'सांध्य दैनिक केषव नवनी का विराज समाजोपयोगी आयोजन में गायन विद्या के लिए सम्मान प्राप्त हुआ। यू.ए.ई. में सफल गायकी के लिए प्रमाण–पत्र द्वारा नवाजा गया।

कला–स्तुति 2009 सम्मान पत्र सिने आर्टिस्ट एसोसिएषन, ऑल इण्डिया कव्वाली फेस्टीवल सन 2009 में तसदीकनामा इनायत किया। उर्दू–अकादमी द्वारा 1994–95 में आपको सम्मानित किया गया। सुरीलो राजस्थान संगीत रत्न 2012 में आपको अलंकृत किया गया। ऐसे कई सम्मान एवं पुरस्कारों से आपकी गायकी को नवाजा गया है।

उ. सईद साबरी अपने पुत्र उ. फरीद साबरी के साथ प्रस्तुति करते हुए

आपकी विभिन्न प्रस्तुतियों को देष के विभिन्न समाचार पत्रों द्वारा समय–समय प्रर प्रकाषित किया जा रहा है। आपने कलाजगत में अपनी उत्कृष्ट सेवाएँ एवं कई प्रषंसनीय कार्यो द्वारा ना केवल राजस्थान बल्कि सम्पूर्ण विष्व में अपनी अद्‌भुत कला एवं संस्कृति के लिए अपनी अलग पहचान बनाई है। कला (संगीत) जगत में आपके किए गए अपूर्व कार्यो एवं उपलब्धियों ने राजस्थान की मान–प्रतिष्ठा को देष–विदेषों में ख्याति दी है। आप आज भी अनवरत रूप से संगीत जगत के उज्जवल भविष्य में अपनी कला उपासना से नित नये कीर्ति मान स्थापित कर रहे है।

संदर्भ ग्रंथसूचीः-

1. BBC Radio 3 Audio (45 minutes): The Nizamuddin shrine in Delhi. Accessed November 25, 2010.
2. BBC Radio 3 Audio (45 minutes) A mahfil Sufi gathering in Karachi. Accessed November 25, 2010.
3. Origin and History of the Qawwali, Adam Nayyar, Lok Virsa Research Centre,Islamabad. 1988.
4. QAWWALI PAGE Islamic Devotional Music by David Courtney, Ph.D